

सार्वजनिक उपक्रम नीतिका पुनर्मूल्यांकन

यह एडिटरियल दिनांक 14/05/2021 को द हट्टि बिजनेस लाइन में प्रकाशित लेख "Is it time to rethink PSE policy?" पर आधारित है। यह वर्तमान परदृश्य में सार्वजनिक क्षेत्र के उद्यमों (PSE) की प्रासंगिकता के बारे में है।

हाल ही में सरकार ने घोषणा की है कि वह मशिन COVID सुरक्षा के तहत Covaxin के निर्माण हेतु वनिरिमाण क्षमता बढ़ाने के लिये तीन सार्वजनिक क्षेत्र के उद्यमों (PSE) का उपयोग करेगी।

इसके अलावा, इस्पात, पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस क्षेत्रों के कई सार्वजनिक उपक्रमों ने तरल चकित्सा ऑक्सीजन उपलब्ध कराने के साथ-साथ इसके परविहन व सरकार के प्रयासों को पूरा करने में मदद की है।

भारत में सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों ने अपनी स्थापना के बाद से देश के उच्च विकास और समान सामाजिक-आर्थिक विकास को प्राप्त करने के उद्देश्य को साकार करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। देश के आर्थिक और सामाजिक ताने-बाने में उनका नरितर योगदान वर्तमान परदृश्य में और भी अधिक प्रासंगिक हो गया है।

इसलिये हाल के नरिणय ने सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों की उपस्थितिको कम करने और नरिी क्षेत्र के लिये नए नविश स्थान बनाने की सरकार की नीति पर बहस को भी पुनर्र्जीवित कर दिया है।

सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों की प्रासंगिकता

- **भारतअभी तक एक वकिसति अरथव्यवस्था नहीं:** ऐतहासिक रूप से सार्वजनिक उपक्रमों ने अरथव्यवस्था के साथ-साथ उद्योगों के लिये भी एक मज़बूत बुनियादी ढाँचा आधार प्रदान किया है।
 - इसके अलावा सार्वजनिक उपक्रमों को सामाजिक-आर्थिक नरिषिपक्षता के साथ स्थापित किया गया था और यह केवल लाभ पर आधारित नहीं थे, जसिने अरथव्यवस्था के लिये एक सही प्रकार का बुनियादी ढाँचा तैयार किया।
 - इसलिये सार्वजनिक उपक्रमों से संबंघित नीति पर शायद फरि से वचिार करने की आवश्यकता है।
- **रोज़गार सृजन:** सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों को औपचारिक क्षेत्र में रोज़गार उत्पन्न करने वालों में से एक माना जाता है जो सुरक्षित और लाभकारी रोज़गार प्रदान करते हैं।
- **संपत्तिका नरिमाण:** स्वतंत्रता के बाद के शुरुआती दशकों में राष्ट्रीय संपत्तिके नरिमाण में सार्वजनिक उपक्रमों का योगदान वशिष रूप से उल्लेखनीय है, खासकर उन क्षेत्रों में जनिहें नरिी क्षेत्र द्वारा नविश पर उच्च जोखमि और कम रटिरन के रूप में माना जाता है।
- **वैश्विक पदचहिन का वसितार:** भारतीय सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रम पहले से ही मध्य पूर्व, अफ्रीका, यूरोप, एशिया, लैटिन अमेरिका और उत्तरी अमेरिका जैसे क्षेत्रों में दुनिया भर में मौजूद हैं तथा भारतीय CPSEs and PSEs के लिये अपने वैश्विक पदचहिन का वसितार करने की जबरदस्त संभावना है।

आगे की राह

- **पीपीपी मॉडल को अपनाना:** PSEs नीति पर फरि से वचिार करने की ज़रूरत है लेकिन उनके कामकाज के संदर्भ में और अधिक वचिार करने की ज़रूरत है।
 - इन कंपनियों को बना सरकारी हस्तक्षेप के एक पेशेवर बोर्ड द्वारा चलाया जाना चाहिये। इन सार्वजनिक उपक्रमों को पीपीपी मॉडल के तहत या संयुक्त उद्यम के रूप में भी चलाया जा सकता है।
- **प्रणालीगत सुधार:** सार्वजनिक उपक्रमों के भवषिय के विकास के लिये सरकार को नमिनलखिति कुछ प्रमुख क्षेत्रों में सहायता प्रदान करने पर तत्काल ध्यान देने की आवश्यकता है: सार्वजनिक उपक्रमों का पुनरुद्धार, भूमि, वतित / बैंकगि / कार्यशील पूंजी, उपयोगिताओं और सेवाओं, पर्यावरणीय मुद्दों और अनुसंधान एवं विकास।
- **प्रतसिपर्धात्मकता मॉडल अपनाना:** सीआईआई शोध रपिरट- 'द राइज ऑफ द एलीफेंट' ने CPSEs को कुशल और वशि्व स्तर पर प्रतसिपर्धी संस्थाओं में बदलने के लिये एक प्रतसिपर्धात्मक मॉडल अपनाने की सफिरशि की है। मॉडल के प्रमुख तत्त्व हैं:

- रोडमैप और उद्देश्य में स्पष्टता
- भूमिका का सीमांकन
- पर्यायलन स्वतंत्रता
- स्वतंत्र और अधिकार प्राप्त बोर्ड
- लेवल प्लेइंग फील्ड
- भवषिय के लिये तैयारी

नषिकर्ष

माना कि अर्थव्यवस्था के विकास में नजी क्षेत्र की महत्त्वपूर्ण भूमिका है, लेकिन सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों ने जो योगदान दिया है, उसे नज़रअंदाज नहीं किया जा सकता है, खासकर आज के कठिन समय में। सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों ने बार-बार देश के विकास में अपना लोहा मनवाया है अतः इनकी भूमिका को सीमित करने की योजना पर पुनर्विचार करने की आवश्यकता है।

प्रश्न: कोवडि -19 महामारी ने सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों की उपस्थितिको कम करने और नजी क्षेत्र के लिये नए निवेश स्थान बनाने की सरकार की नीति पर बहस को भी पुनर्जीवित कर दिया है। चर्चा कीजिये।

PDF Refernece URL: <https://www.drishtias.com/hindi/printpdf/rethinking-pse-policy>

